

- निप्र mit gen.: दैरस्य निप्रहृति P. 2,3,56, Schol.
- विप्र, partic. °कृत् *geschlagen, getroffen, mitgenommen: ein Heer* MBa. 7, 1581. 8, 2386. सम्बुवर्षणा गावः HARI. 3913. वारिविप्रहृतानीव पङ्कजानि 5697. MBa. 7, 3236. श्रुं उनbetreten: Wald R. 1, 26, 12. Weg 3, 74, 4.
- प्रति 1) *schlagen gegen (gen.)* PAṄKĀV. Br. 43, 11, 10. *losfahren auf Jmd (acc.):* मधैः u. s. w. प्रत्यग्न्याम् MBa. 3, 12217. इन्द्रमसुरान्प्रतिभूषम् 7, 1120. — 2) *wiederschlagen: Pratihṛtynādāt:* MBa. 3, 1091. Spr. (II) 181. 5611. प्रतिकृतुं (so zu lesen mit der ed. Bomb.) न चेकृति कृतारम् MBa. 12, 8437. — 3) *zerschlagen, brechen: पर्वान् RV. 10, 48, 7. Nir. 3, 10. श्रभिमातिम् RV. 8, 25, 15. — 4) anspießen: मृके यद्वा प्रत्यकृद्वै एके RV. 1, 32, 12. — 5) Jmd oder Etwas zurückschlagen, abwehren, sich wehren gegen RAGH. 9, 60. KATH. 18, 150. 114, 108. 121, 207. BHAG. P. 10, 77, 2. शैर्वर्ष प्रतिजप्ते MBa. 1, 8278. श्वासाणा प्रत्यग्न्याम् 3, 12233. 1, 1472. 4, 1684. 7, 8677 (°हृन्य �beide Ausgg.). KATH. 48, 75. 50, 13. 68. 115, 21. 68. 66. प्रतिघटीव प्रभया प्रभार्कस्य MBa. 2, 81. Ind. St. 10, 281. *fern halten, verscheuchen:* डुःखप्रम् MBa. 13, 4171. KATH. 36. 67. धर्मः पापेन प्रतिकृत्यते स्विदुताहो धर्मः प्रतिहृति पापम् MBa. 8, 1597. 1599. यदा प्रतिकृत्यते KAU. zu P. 1, 4, 66. *hemmen, aufhalten:* वेगं समरे कृपादिनाम् MBa. 6, 4788. श्रिष्वेगवह्नः प्राणो गुदाते प्रतिकृत्यते 12, 6878. Suçā. 1, 117, 11. कृदितम् 267, 11. sg. विद्वै: प्रतिकृत्यमाना: Spr. (II) 4342. प्रकृतिः सा सम परा न व्याचितप्रतिकृत्यते (so ed. Bomb.) MBa. 13, 6329. शास्त्रे बुद्धिन् प्रतिकृत्यते P. 1, 3, 38, Schol. पटेषो सर्वकृत्येषु (कोमेषु Gora). मनो न प्रतिकृत्यते R. 2, 52, 24 (49, 18 Gora.). पौवरायाभिषेचनम् *verteilen* R. GOR. 2, 20, 25. प्रतिकृत्यमि समाज्ञाम् 7, 39, 14. — 6) pass. mit abl. *fern gehalten werden von, verlustig gehen:* निःशेयसात् WINDISCHMANN, Sancara 94. — 7) *absol. °कृत्य in entgegengesetzter Richtung:* कृष्टि KAU. 20. — 8) partic. °कृत a) *wogegen Etwas schlägt:* तीव्रादातप्रतिकृतरुक्त्यं CĀK. 32. तोभप्रतिकृतशिला: — श्रिकृत्याः RIGA-TAB. 1, 372. *anschlagend an:* शिले (v.l. शिलै) शिलाः CĀK. 50. श्रकृतिम् ° (वउपी) R. 3, 61, 9. = प्रतिस्खलित H. an. 4, 113. — b) *zurückgeschlagen, abgewehrt:* श्रव्यं MBa. 3, 11965. वश्व BHAG. P. 8, 11, 33. 36. 10, 59, 20. ब्रह्मशाप 9, 4, 18. माया MBa. 3, 12142. *zurückgewiesen, abgewiesen:* ऐते प्रतिकृता द्वारि तिष्ठति तापसा: R. 7, 60, 3. CĀK. 191. MĀLATIM. 156, 9. विपद्य निवृत्ता मे द्वारात्प्रतिकृता इव KATH. 21, 121. सात्र MBa. 4, 671. °विद्या: क्रिया: CĀK. 13. इत्यनुमानं प्रतिज्ञाप्रायाप्रतिकृतम् SARVADARÇANAS. 128, 19. इत्थमप्रतिकृतं चापलं दृहति *nicht fern gehalten, — vermieden* CĀK. 89, 12, v.l. *gehemmt, aufgehalten:* वायु Suçā. 1, 281, 12. मृत् HARI. 3893. मात्र BHAG. P. 2, 7, 92. आतप 1, 11, 14. कृत्य HARI. 3370. क्रिया KUMĀRAS. 2, 48. श्रिष्वेक R. GOR. 2, 62, 3. संगत KĀM. NITIS. 13, 78. रूप MEGH. 20. उद्यम BHAG. P. 6, 3, 3. पौरुष 3, 19, 12. कोप MĀLATIM. 174, 6. गति MBa. 3, 16769. तमोवृति VIKR. 20. MEGH. ed. St. VI. बुद्धीन्द्रियप्रसर् SARVADARÇANAS. 101, 2. आज्ञा R. 5, 18, 8. 21, 11. शासन 7, 67, 12. बुद्धि 5, 18, 13. स्वन so v. a. *unterblieben:* R. 2, 113, 24. तत्रोचिषा प्रतिकृते निमित्य मुनिरत्तिपी so v. a. *geblendet:* BHAG. P. 4, 1, 25. मृत्या प्रतिकृतेतापा: 8, 6, 2. = रुक् H. an. श्रप्रतिकृत *nicht abwehrt, nicht gehemmt, nicht aufgehalten* KATH. 32, 92. इष्यादप्यप्रतिकृतकामा: BHAG. P. 5, 24, 8. *ununterbrochen:* भक्ति 4, 2, 6. *ungeschwächt:**
- बुद्धि Spr. (II) 2333. इन्द्रियशक्ति 5479. *unverwehrt, freigestellt* PAṄKĀT. 27, 11. KULL. zu M. 4, 5. भिन्नाहार Spr. (II) 4386. *unangefochten:* मत्तिव KATH. 60, 254. Buag. P. 6, 16, 28. *unbeschränkt:* चनुस् Spr. (II) 1776. *unfehlbar:* प्रतिज्ञा MĀLATIM. 86, 3. *unaufhaltsam, unwiderstehlich:* शक्ति (Speer) HARI. 12733. चक्र 609. 10754. MBa. 1, 2988. MĀRK. P. 72, 31. BHAG. P. 4, 15, 10. 16, 14. उर्मयः Z. d. d. m. G. 27, 83. तेजस् R. 4, 26, 19. प्रताप VĀRĀH. BHAG. S. 68, 103. तप्तम् MĀRK. P. 73, 65. गति HARI. 12737. KATH. 17, 4. MĀRK. P. 61, 12. TATTVAS. 8. शक्ति KATH. 123, 226. Personen MBa. 13, 6840. KATH. 42, 86. 49, 247. Verz. d. Oxf. H. 247, b, No. 624. — c) *abgelaufen:* तत्त्वये (sc. मंवत्तमे) वाप्रतिकृते PĀR. GRH. 2, 1. — d) *beschränkt, dummi:* °धी adj. Spr. (II) 2047. — e) *verhasst* TRAI. 3, 3, 170. H. an., wo स्याद्विष्टे st. खाधिष्टे zu lesen ist. — f) *in seinen Erwartungen getäuscht* AK. 3, 1, 41. H. 430. — g) = दृष्टि TRAI. 3, 3, 105. = रुषित von Zähnen d. i. *stumpf* (von Säuren) P. 7, 2, 29, VÄRTT. 2, Schol. — h) *schlechte Lesart für प्रकृति H. 1492.* — caus. JMD *abwehren:* कः पार्थ प्रतिघातयेत् MBa. 7, 6993. — Vgl. प्रतिघ fgg., प्रतिश्व und प्रतिकृति fgg.
- संप्रति pass. *sich stossen:* वायुः संप्रतिकृत्यते KĀRAKA 10, 7.
- वि 1) *zerschlagen, zerbrechen, zerstören; auseinander treiben* Nir. 3, 9, 4, 5. Bäume RV. 5, 83, 2, 1, 36, 16. संटिक्षः 51, 9. देहः 6, 47, 2. पूरः 4, 41, 3, 7, 21, 4. डुरिता 9, 62, 2. Feinde 5, 4, 5. 30, 7, 6, 53, 4. रूतिसि 9, 17, 3. 10, 111, 6. AV. 8, 5, 8. मिथ्या विकेश्योऽवि घ्राताम् 1, 28, 4, 6, 32, 3. PAṄKĀV. Br. 19, 18, 2. सुत्तम्भम् TBR. 2, 7, 18, 1. *abreißen:* कृश्यै 1, 5, 10, 7. CAT. Br. 14, 7, 1, 10. तूस्तानि die Flechten lösen P. 3, 1, 21, Schol. Vor. 21, 17. — 2) *auseinander schlagen so v. a. ausstrecken:* ein Fell RV. 5, 85, 1. शङ्कुभिः CAT. Br. 2, 1, 1, 10. — 3) *abschlagen, abwehren, sich wehren gegen:* तलप्रलोरन्योश व्यहन्ति MBa. 3, 11117. 13, 73001 (nach der Lesart der ed. Bomb.). यदि प्रतीपै दैवं ते न विहृन्याम् R. GOR. 2, 20, 32. — 4) *stören, hemmen, unterdrücken, aufheben:* रूतासि कृतून् BHATT. 1, 9. पापम् HARI. 8459. संतिमंकृताम् KIR. 5, 17. कुलधर्मम् R. 2, 110, 37. रूप्याभिषेचनम् 23, 22. कर्मणि Spr. (II) 4. कृत्यम् 5362. 6463, v. l. मम प्रणापम् RAGH. 2, 58. Spr. (II) 1138. परहितम् 1460. कृतम् BHAG. P. 5, 1, 12. व्रतम् 6, 19, 18. विक्रमम् 10, 2, 21. न संयोगं स्वर्विभक्तिविकृति RV. PRAT. 6, 10. pass.: न विहृन्यते मे गतिः R. 4, 43, 15. RAGH. 3, 27. रथोः कुले न व्यहृन्यते कदाचिदर्थिता 11, 2. शासनम् R. 7, 108, 15. कुतश्चिन्न विकृत्येत तस्य चाज्ञा BHAG. P. 11, 15, 27. ऐश्वर्यम् GAUDAP. zu ŚIṄKHJAK. 45. WILSON, ebend. S. 137. ग्रात्वं विकृतेत Schol. zu VS. PRAT. 4, 185. SARVADARÇANAS. 130, 20. 161, 17. रात्र्यं कुरुणामनयाद्विकृति so v. a. *vor-enthalten* MBa. 5, 5033. पद्मान्योक्तपृष्ठाणि दृष्टा दृष्टिविकृत्यते das (fernere) Sehen wird aufgehoben so v. a. *wird unnütz, dann braucht man Nichts mehr zu sehen* R. 3, 79, 28. — 5) pass. *sich quälen, sich Sorge machen:* श्रलाभे न विकृत्येत लाभशैनं न वर्षयेत् MBa. 12, 9970. किमिदं लं विकृत्यसे (विमुक्त्यसे die neuere Ausg.) HARI. 9902. लं तु मिद्या विकृत्यसे R. 2, 108, 12 (116, 21 GOR.). मुखानि चानुभूयसे मनश्च न विकृत्यते MBa. 2, 151. नैव शक्वस्त्वया ज्ञेतुं वज्रनाभ विकृत्यसे (= मियसे NILAK.) so v. a. *du zerbrichst dir unnütz darüber den Kopf* HARI. 8825. मा विकृत्यत गच्छत MBa. 3, 15138. — 6) partic. विकृत a) *ausgerissen, aufgewühlt:* वराहविकृत vom Eber TBR. 1, 1, 2, 7. 2, 1, 8. CAT. Br. 14,